किसी ख़बर को सुनकर उस से असर लेने से पहले उसकी जाँच कर लो

अल्लामा सै० मुहम्मद रज़ी साहब क़िब्ला, कराची
अनुवादकः सैय्यद सुफ़यान अहमद नदवी

इस्लाम ने किसी ख़बर के बयान करने और उसकी तसदीक़ करने के लिए मुसलमानों को बहुत ज़्यादा एहतियात से काम लेने पर ज़ोर दिया है क्योंकि ज़्यादातर झगड़े फ़साद और बड़ी-बड़ी तबाहियों की शुरुआत अफ़वाहों और झूठी ख़बरों ही से हुआ करती है। लोग या तो ख़ुद ही जानबूझ कर ग़लत बातें मशहूर किया करते हैं ताकि उनकी आड़ लेकर वह अपने मक़सदों को हासिल कर सकें या फिर वह सुनी सुनाई बातों को बग़ैर तहक़ीक़ किये और बग़ैर उनकी जाँच किए हुए सही समझ लेते हैं और दूसरों से भी उन्हें उसी तरह बयान करने लगते हैं जैसे वह बिल्कुल दुरुस्त और यक़ीनी हों जिसके नतीजे में ये लोग भी अफ़वाहों के असली गढ़ने वालों की तरह उन तमाम बुराईयों और तबाहियों के ज़िम्मेदार हो जाते हैं जो उन बेबुनियाद ख़बरों की वजह से सामने आती हैं। क़ुरआन करीम में ख़ुदा का इरशाद हैः- ''ऐ ईमान वालो! अगर तुम्हारे पास कोई फ़ासिक़ शख़्स कोई ख़बर लेकर आए तो तुम उस की ख़ूब जाँच-पड़ताल कर लिया करो (ऐसा न हो) कि तुम किसी क़ौम को (अपनी) बेवक़ूफ़ी की वजह से नुक़सान पहुँचा दो फिर अपने किए पर पछताओ।'' (सूरए हुजरात, आयत-6) इस पाक आयत में खुले तौर पर ख़ुदा ने तमाम मुसलमानों को इसका हुक्म दिया है कि अगर ख़बर देने वाले का कैरेक्टर सही न हो तो उसकी बयान की हुई बातों को बग़ैर पूरी छान-फटक किये हरगिज़ न माना जाए क्योंकि इस तरह ख़बर की तसदीक़ करने और उस पर अमल करने या उसको दूसरों तक फैलाने में बड़े ख़तरे पैदा हो सकते हैं। इसके साथ ही क़ुरआन करीम ने अफ़वाहों को फैलाने वालों और बेबुनियाद ख़बरों के गढ़ने वालों की हैसियत भी साफ़ कर दी और इस तरह अफ़वाह फैलाने के इन दोनों पहलुओं पर इस्लामी नज़रिया पूरी तरह हमारे सामने आ जाता है। जो लोग हक़ बात को छुपाकर ग़लत बातों को फैलाते हैं इस्लाम में वह सच्चे मुसलमान नहीं हैं बल्कि मुनाफ़िक़ हैं चुनानचे ख़ुदा फ़रमाता है,

''ये (मुनाफ़िक़ लोग) अपने मुँहसे वह बातें कहते हैं जो उनके दिलों में नहीं है और जिन बातों को वह छुपाते हैं उन्हें ख़ुदा ख़ूब जानता है।'' (आले इमरान, आयत-167) मतलब ये है कि ये सिर्फ़ मुनाफ़िक़ों का ध ोका और फ़रेब है कि वह सच्ची बातों को जानते हुए अपनी ज़बान से उनके ख़िलाफ़ बयान करते हैं और असलियत को छुपाने की कोशिश करते हैं मगर ख़ुदा उनकी इस हरकत से अन्जान नहीं है और वह उनके दिलों का हाल अच्छी तरह जानता है। इसका नतीजा यही निकलता है कि अगर कोई शख़्स सच्चा मुसलमान है और दिल से क़ुरआन पाक और इस्लाम पर ईमान और यक़ीन रखता है तो वह कभी जानबूझ कर झूठी बात ज़बान से नहीं निकालेगा और वही कहेगा जिसकी सच्चाई और सेहत पर उसे यक़ीन होगा इसी तरह बिना तहक़ीक़ किये और बग़ैर पूरी तरह यक़ीन किये हुए वह अफ़वाहों पर कान न धरेगा और उन पर अमल भी न करेगा। ये दोनों ही बातें ग़लत ख़बर फैलाने की सबसे बुरी आदत के दो बहुत ही ख़तरनाक रुख़ हैं और बिल्कुल इस्लाम के ख़िलाफ़ हैं। ये वह हदें और किनारे हैं जिनसे इस आदत के पड़ने की शुरुआत होती है और

आख़िर में फ़िर ये अकेली बुराई और अकेला जुर्म नहीं रहती बल्कि बुराईयों, बद-अख़लाक़ियों, गुनाहों और हर तरह की तबाहियों का एक बड़ा मजमुआ बन जाती है और एक ऐसा नासूर हो जाती है जो हमेशा रिस्ता रहता है। और जिस से इंसानी समाज के हर डिपार्टमेन्ट के लिए तबाही और बर्बादी का दरवाज़ा खुल जाता है। शुरु में जो बहुत मामूली अंगारा और छोटी सी चिंगारी लगती है वह कुछ ही ज़माने में पूरी इंसानी ज़िन्दगी को जहन्नम बना देती है और फिर उसकी आग पर कन्ट्रोल कर लेना किसी के भी बस में नहीं रहता यहाँ तक कि दूसरों के साथ वह लोग भी जो अफ़वाह फैलाने के ज़िम्मेदार होते हैं इस आग का ईंधन बनने से बच नहीं सकते। ग़रज़ इंसानी समाज की सलामती और अमन व सुकून बड़ी हद तक इस बात पर टिका है कि ख़बरें जुटाने और ख़बर या कोई और बात बयान करने या उस पर अमल करने में पूरी छान-फटक की जाए और उसका पूरी तरह से जाएज़ा लिया जाए फिर जब पूरा यक़ीन और मुकम्मल भरोसा पैदा हो जाए तो उस वक़्त उसकी तसदीक़ की जाए।

किसी समाज की एकजुटता और एकता को ख़त्म करने और एकजुट होने को टुकड़े-टुकड़े करने में ग़लत ख़बरें फैलाने का बड़ा हाथ होता है और जो काम हथियार नहीं कर सकता वह इससे लिया जाता है। और इसी बुनियाद पर ये बात भी यक़ीनी है कि जो क़ौम अफ़वाहों और बेबुनियाद ख़बरों को नहीं रोक सकती वह कभी अपने अन्दर एकता नहीं पैदा कर सकती और हमेशा अफ़रातफ़री और बिगाड़ का शिकार बनी रहती है। वह अपने छोटे से छोटे दुश्मन का मुक़ाबला नहीं कर सकती और न किसी मैदान में कभी आगे बढ़ सकती है। अफ़वाह फैलाना अम्न और सलामती का दुश्मन है। लॉ एण्ड आर्डर की ज़िद है और बिगाड़ और फ़साद की ज़मानत है इसलिए जब तक क़ौम से इस बीमारी को दूर न किया जाएगा उसके लिए ये मुमकिन ही नहीं है कि वह ज़िन्दगी की दौड़ में एक क़दम भी आगे बढ़ सके बल्कि अपने वुजूद को बाक़ी रख सके। क़ुरआन करीम ने सच्ची बात कहने पर इसी वजह से मुसलमानों को ज़ोर दिया है ताकि वह इन ख़राबियों से बचे रह सकें। एक जगह फ़रमाया गया है, ''ऐ ईमान वालो! ख़ुदा से डरो और ठीक बात कहा करो।'' (सूरए अह्ज़ाब, आयत-70) इसका मतलब ये हुआ कि सच्ची और ठीक बात कहना ख़ुदा से डरने की निशानी है और अफ़वाह फैलाना उसका उलट है यानी ऐसे लोग जो इस बुरी आदत से परहेज़ नहीं करते उनके दिल में ख़ुदा का बिल्कुल डर नहीं है और ज़ाहिर है कि ऐसे आदमियों का इस्लाम से किस हद तक वास्ता और जोड़ हो सकता है।

इसके साथ ही झूठी ख़बरें फैलाना इंसानी समाज पर एक बड़ा ज़ुल्म भी है इसलिए कि इंसान को उसका बुनियादी हक़ हासिल है कि उसे हमेशा सही और सच्ची बात बताई जाए और अगर ऐसा न होगा तो वह अपने इस बुनियादी हक़ से महरूम हो जाएगा जिसे दूसरे शब्दों में ज़ुल्म कहा जाता है और ये हक़ीक़त है कि इस्लाम और ज़ुल्म एक जगह इकटठा नहीं हो सकते।

ग़लत बात कहना यक़ीनन बुराई को फैलाना है, और क़ुरआन पाक का एलान है कि जो लोग बुराई फैलाते हैं उनके लिए दुनिया और आख़िरत में दर्दनाक अज़ाब है। अफ़वाह फैलाना खुला झूठ है, इल्ज़ाम लगाना है, ख़यानत करना और धोका देना है और ये सब वह बातें हैं जिन पर क़ुरआन और हदीस में लानत और बुराई की गई है। रसूल[स०] ने फ़रमाया है, ''जो आदमी हमें धोका देता है उस से हमारा कोई वास्ता नहीं।'' (सही मुस्लिम) इस्लाम का पैग़ाम आपसी भाईचारगी और एकजुटता है, आपस की मुहब्बत और मेहरबानी है, एकता, अखण्डता और केन्द्रीयता है, और इसके ख़िलाफ़ ग़लत बात कहने से इस्लामी सफ़ों में नीचता, बिगाड़ और अफ़रातफ़री पैदा होती है इसलिए इसमें कोई शक नहीं कि ये इस्लामी ज़िन्दगी गुज़ारने के तरीक़े से सख़्त बग़ावत, ख़ुदा के पैग़ाम से भागना और उसकी बेइज़्ज़ती है और जो लोग भी इस्लामी भाईचारगी का इस तरह मज़ाक़ उड़ाते हैं और झूठी ख़बरें फैलाकर इस्लामी मिल्लत में बिगाड़, बे-इन्तिज़ामी और बद-अमनी पैदा करते हैं उनके दिल और दिमाग़ इस्लामी रूह और ईमानी समझ से बिल्कुल महरूम हैं।

